पाठ 2

4NUF78

राजधर्म

(महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व शाक्य गणराज्य में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था। जातक कथाओं में बोधिसत्त्व के नाम से विभिन्न रूपों में उनके पूर्व जन्मों का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत पाठ 'राजधर्म' में ऐसी ही एक जातक कथा दी जा रही है। इस कथा में बताया गया है कि किसी राज्य का राजा जैसा आचरण करता है उसका प्रभाव उस राज्य की प्रजा के साथ सम्पूर्ण पर्यावरण पर भी पड़ता है।)

ब्रह्मदत्त विवेकशील राजा था। वह सत्यासत्य, उचित-अनुचित का सदा ध्यान रखता था। वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता था, जो उसके दोषों को बता सके। प्रशंसा करने वाले तो सभी थे, दोष बताने वाला कोई नहीं मिलता था। अन्तःपुर, राजदरबार, नगर, नगर के बाहर सभी जगह लोग राजा के गुणों का बखान करते थे, पर उसके अवगुण बताने वाला कोई नहीं था।

राजा ने सोचा कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय, जो उसके दोष बता सके। अतः वेश बदलकर वह पूरे जनपद में घूमा, पर वहाँ भी उसे अपना गुण ही सुनने को मिला, दोष नहीं, फिर वह घूमता हुआ हिमालय प्रदेश पहुँचा। घने जंगलों और दुर्गम पर्वतों को पार करता हुआ वह सुरम्य हिमालय प्रदेश में स्थित बोधिसत्त्व के आश्रम पर जा पहुँचा। उसने उन्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया। बोधिसत्त्व ने राजा का कुशल क्षेम पूछा, फिर आश्रम में राजा एक ओर चुपचाप बैठ गया।

बोधिसत्त्व जंगल से पके गोदे लाकर खाते थे। वे गोदे शक्तिवर्धक और शक्कर के समान मीठे थे। उन्हांेने राजा को सम्बोधित कर कहा, ”महापुण्य, ये गोदे खाकर पानी पीओ।“ राजा ने गोदे खाये और पानी पिया। उसे गोदे बड़े मधुर और स्वादिष्ट लगे। उसने बोधिसत्त्व से पूछा, ”भन्ते क्या बात है, ये गोदे बड़े मीठे और स्वादिष्ट हैं !“

”महापुण्य, राजा निश्चय ही धर्मानुसार और न्यायपूर्वक राज करता है, उसी से ये इतने मीठे हैं। राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर तेल, मधु, शक्कर आदि तथा जंगल के फल-फूल सभी कड़वे और स्वादहीन हो जाते हैं। केवल यही नहीं सारा राष्ट्र ओजरहित हो जाता है, दूषित हो जाता है। राजा के धार्मिक और न्यायप्रिय होने पर सभी वस्तुएँ मधुर और शक्तिवर्धक होती हैं और सारा राष्ट्र शक्तिशाली तथा ओजस्वी बना रहता है।“

”भन्ते, ऐसा होता होगा“, यह कह कर राजा अपना परिचय दिये बिना ही बोधिसत्त्व को प्रणाम कर अपनी राजधानी लौट आया। उसने सोचा, तपस्वी बोधिसत्त्व के कथन की परीक्षा करूँगा। अधर्म और अन्याय से राज करूँगा, देखँूगा कि बोधिसत्त्व की बात में कितनी सच्चाई है। राजा ने ऐसा ही किया। कुछ समय बीत जाने पर वह फिर बोधिसत्त्व के आश्रम में पहुँचा और उन्हें प्रणाम कर एक ओर बैठ गया।

बोधिसत्त्व ने फिर पके गोदे दिये। राजा को वे गोदे बड़े कड़वे लगे। राजा ने गोदे थूक दिये और कहा, "भन्ते, ये बड़े कड़वे हैं।"

"महापुण्य, राजा अवश्य अधार्मिक और अन्यायी होगा। राजा के अधार्मिक और अन्यायी होने पर जंगल के फल-फूल तथा सभी वस्तुएँ नीरस और कड़वी हो जाती हैं, स्वादरहित हो जाती हैं, यही नहीं सारा राष्ट्र ओजरहित हो जाता है।"

राजा के और जिज्ञासा करने पर बोधिसत्त्व ने कहा, "गायों के नदी तैरते समय बैल (नेता) यदि टेढ़ा जाता है तो नेता के टेढ़े जाने के कारण सभी गायें टेढ़ी जाती हैं और मार्ग से भटक जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में भी जो श्रेष्ठ होता है, वह नेता माना जाता है। यदि वह टेढ़े मार्ग से जाता है, अधर्म करता है तो सारी प्रजा कुमार्ग पर चलती है और अधर्म करने लगती है। राजा ही नेता होता है। राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुःख को प्राप्त होता है। गायों के नदी पार करते समय यदि बैल (नेता) सीधा जाता है तो नेता के सीधा जाने के कारण सभी गाय सीधी जाती हैं और नदी पार कर जाती हैं। इसी प्रकार मनुष्यों में जो श्रेष्ठ माना जाता है, वही नेता माना जाता है। यदि वह धर्म का अनुसरण करता है, तो शेष प्रजा भी धर्म का मार्ग अपनाती है। राजा के धार्मिक होने पर सारा राष्ट्र सुख को प्राप्त करता है।"

बोधिसत्त्व से यह शिक्षा प्राप्त कर राजा ने अपना राजा होना प्रकट किया और विनयपूर्वक बोला, ”भन्ते, मैंने ही पहले गोदों को मीठा कर फिर कड़वा किया। अब फिर उन्हें मीठा करूँगा और कभी उन्हें कड़वा नहीं होने दूँगा। यही मेरा संकल्प और व्रत है।“

बोधिसत्त्व को प्रणाम कर वह राजधानी लौट आया। वह धर्म और न्यायपूर्वक राज्य करने लगा। उसका राज्य फिर धन-धान्य से भर गया।

- जातक कथा से

शब्दार्थ

विवेकशील = विचारवान। अन्तःपुर = रनिवास। दुर्गम = जहाँ पहुँचना कठिन हो। सुरम्य = रमणीक। भन्ते = बौद्ध धर्म में मान्य पालि भाषा का आदर सूचक शब्द। ओज = कान्ति। जिज्ञासा = जानने की इच्छा। अनुसरण = पीछे चलना। संकल्प = दृढ़ निश्चय।

प्रश्न-अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने आस-पास क्षेत्र में पाये जाने वाले बरगद, पीपल, पाकड़ या अन्य वृक्षों को निकट से देखिए और उन पर बैठे पक्षियों के क्रियाकलापों को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

2. बरगद के वृक्ष का चित्र बनाइए।

3. इस पाठ के आधार पर आप भी दो सवाल बनाइए।

4. लिखिए- इस कहानी को पढ़ने के बाद आप क्या करेंगे ? क्या नहीं करेंगे ?

विचार और कल्पना

1. इस पाठ में एक अच्छे राजा के आवश्यक गुण बताये गये हैं। आपके विचार में किसी राजा/ श्रेष्ठ व्यक्ति/नेता में कौन-कौन से गुण होने चाहिए? उन्हें लिखिए।

2. जब राजा ने अन्याय और अधर्म के साथ राज्य किया होगा, तब उसकी प्रजा को क्या-क्या कष्ट भोगने पड़े होंगे ?

3. बोधिसत्व जंगल के पके गोदे खाते थे जो शक्कर के समान मीठे थे। आप अपने द्वारा खाए हुए उन फलों के नाम लिखिए जो एक बीज वाले हों, अनेक बीज वाले हों।

कहानी से

1. ब्रह्मदत्त नामक राजा क्यों प्रसिद्ध था?

2. राजा ब्रह्मदत्त वेश बदलकर क्यों घूमता था?

3. बोधिसत्त्व ने राजा को गोदों के मीठे और स्वादिष्ट होने का क्या कारण बताया?

4. राजा ने अधर्म और अन्याय से राज्य करना क्यों शुरू किया?

5. 'राजा के धर्म विमुख होने पर सारा राज्य दुःख को प्राप्त होता है', कथन का आशय बताइए।

भाषा की बात

1. नीचे लिखे हुए वाक्य को ध्यान से पढ़िए-

'राजा ने सोचा कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय, जो उसके दोष बता सके।' इस वाक्य में मुख्य वाक्य है- 'राजा ने सोचा।' यह एक साधारण वाक्य है। इसके अतिरिक्त दो अन्य साधारण वाक्य हैं:-

(क) कि जनपद में कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाय।

(ख) जो उसके दोष बता सके।

दोनों वाक्य क्रमशः 'कि' और 'जो' के द्वारा जोड़े गये हैं। इन्हें संयोजक अव्यय कहते हैं। इन तीनों वाक्यों में दूसरा वाक्य पहले के अधीन है और तीसरा वाक्य दूसरे के अधीन। इस प्रकार तीन स्वतन्त्र वाक्य आपस मंे मिलकर मिश्र वाक्य बने हैं।

नीचे लिखे मिश्रित वाक्यों से मुख्य और अधीन वाक्य अलग-अलग लिखिए-

(क) वह ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ता था, जो उसके दोषों को बता सके।

(ख) अधर्म और अन्याय से राज करूँगा और देखूँगा कि बोधिसत्त्व की बात में कितनी सच्चाई है।

2. तुलना की दृष्टि से विशेषण शब्दों की तीन अवस्थाएँ होती हैं- मूलावस्था, उत्तरावस्था और उत्तमावस्था। मूल शब्द में 'तर' एवं 'तम' लगाने से क्रमशः उत्तरावस्था एवं उत्तमावस्था बनती है, जैसे- श्रेष्ठ-श्रेष्ठतर- श्रेष्ठतम। यहाँ श्रेष्ठतर का अर्थ 'उससे श्रेष्ठ' और श्रेष्ठतम का अर्थ 'सबसे श्रेष्ठ' है।

इसी प्रकार नीचे दिये गये शब्दों के तीनों रूप लिखिए-

गुरु, अधिक, उच्च, न्यून, सरल।

3. नीचे कुछ शब्द और उनके विलोम शब्द दिये गये हैं। उन्हें ध्यानपूर्वक पढ़कर शब्द और उनके विलोम शब्दों के जोड़े बनाकर लिखिए-

अधार्मिक, सुगम, रहित, गुण, सरस, स्थूल, विषाद, अवगुण, सहित, सूक्ष्म, दुर्गम, नीरस, हर्ष, धार्मिक।

4. शब्द अन्त्याक्षरी को आगे बढ़ाइए-

प्रबन्ध-धनवान-नदी.....

यह भी करें-

चित्र देखकर छात्र अपने शब्दों में कहानी लिखें।

इसे भी जानें

व्यास सम्मान- साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु के. के. बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा दिया जाता है।

गौतम बुद्ध-महात्मा गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ, वाराणसी में दिया था।

बौद्ध धर्म के इतिहास में इस घटना को 'धर्म चक्र प्रवर्तन' का नाम दिया गया है।